विपरीतार्थक (विलोमार्थक) शब्द

कोनहु शब्दक विपरीत (प्रतिकूल) अर्थ द्योतित कयनिहार शब्दकेँ विपरीतार्थक अथवा विलोमार्थक शब्द कहल जाइछ । जेना–विश्वासक अविश्वास, विपन्नक सम्पन्न साक्षरक निरक्षर, उपकारक अपकार आदि ।

शब्दक रूपान्तरणमे ई ध्यान राखब आवश्यक जे यथासंभव तत्सम शब्दक विलोम तत्सममे तद्भवक विलोम तद्भवमे, संज्ञाक विपरीतार्थक संज्ञामे तथा विशेषणक विपरीतार्थक विशेषणमे देल जयबाक चाही ।

शिक्षार्थी लोकनिसँ अपेक्षा जे निम्नलिखित शब्द सभक विपरीतार्थक शब्दकेँ कंठाग्र करताह :

[अ]

1.	अभिज्ञ – अनभिज्ञ	2.	अतिवृष्टि – अनावृष्टि
3.	अनाथ – सनाथ	4.	अवनति – उन्नति
5.	अपेक्षा – उपेक्षा	6.	अनुकूल – प्रतिकूल
7.	अनुरक्त – विरक्त	8.	अर्थ – अनर्थ
9.	अल्पायु – दीर्घायु, चिरायु	10.	अल्पज्ञ – बहुज्ञ
11.	अनुराग – विराग	12.	अंतरंग – बहिरंग
13.	अन्तर्मुखी – बहिर्मुखी	14.	अल्प – बहु
15.	अपमान – सम्मान	16.	अंत – आदि
17.	अधम – उत्तम	18.	अग्रज – अनुज
19.	अज्ञ – विज्ञ, प्रज्ञ	20.	अमृत – विष
21.	अलभ्य – लभ्य	22.	अपन – अनकर
23.	अमर – मर्त्य	24.	अमावस्या – पूर्णिमा

25. अवनि - अम्बर
26. अनुग्रह - विग्रह
27. अथ - इति
28. अनुराग - विराग
29. असल - नकल
30. अति - अल्प
31. अल्पसंख्यक - बहुसंख्यक
32. अगम - सुगम
33. अभ्यन्तर - वाह्य
34. अवनत - उन्नत
35. अत्यधिक - अत्यल्प
36. अनुलोम - विलोम
37. अधिकतम - न्यूनतम
38. अवनत - उन्नत
39. अस्त - उदय
40. अंतर्द्वन्द्व - बहिर्द्वन्द्व

[आ]

41. आचार - अनाचार
42. आशा - निराशा
43. आश्रित - अनाश्रित
44. आगत - अनागत
45. आकर्षण - विकर्षण
46. आगाँ - पाछाँ
47. आदान - प्रदान
48. आहार - निराहार
49. आस्था - अनास्था
50. आरोह - अवरोह
51. आदर - अनादर
52. आधुनिक - प्राचीन
53. आज्ञा - अवज्ञा
54. आवश्यक - अनावश्यक
55. आलोक - अंधकार
56. आयात - निर्यात
57. आतुर - अनातुर
60. आस्तिक - नास्तिक
61. आर्य - अनार्य
62. आसक्त - अनासक्त
63. आर्द्र - शुष्क
64. आद्य - अन्त
65. आगम - निगम, लोप
66. आय - व्यय
67. आकीर्ण - विकीर्ण
68. आकाश - पाताल

69. आयास - अनायास
70. आविर्भाव - तिरोभाव
71. आदृत- अनादृत

[इ, ई]

72. इच्छा - अनिच्छा
73. इहलोक - परलोक
74. इष्ट - अनिष्ट
75. इतिश्री - श्रीगणेश
76. ईश - अनीश
77. ईश्वर - अनीश्वर

[उ, ऊ]

78. उत्कर्ष - अपकर्ष
79. उत्थान - पतन
80. उन्नति - अवनति
81. उत्कृष्ट - निकृष्ट
82. उदार - अनुदार, कृपण
83. उपयुक्त - अनुपयुक्त
84. उपस्थित - अनुपस्थित
85. उपकार - अपकार
86. उच्च - निम्न
87. उदय - अस्त
88. उन्मुख - विमुख
89. उत्तम - अधम
90. उपसर्ग - प्रत्यय
91. उर्वर - बंजर
92. उत्तरायण - दक्षिणायण
93. उद्धत - विनीत
94. उन्मीलन - निमीलन
95. उदात्त - अनुदात्त
96. उच्च - निम्न
97. उत्साह - अनुत्साह, निरुत्साह
98. उत्तीर्ण - अनुत्तीर्ण
99. उचित - अनुचित
100. उपस्थित - अनुपस्थित
101. उदयाचल - अस्ताचल
102. उग्र - सौम्य
103. उधार - नगद
104. उपयोग- दुरुपयोग
105. ऊँच - नीच

[ऋ]

106. ऋजु - वक्र
107. ऋत - अनृत

[ए]

108. एक - अनेक

109. एकता - अनेकता

110. एकतन्त्र - बहुतन्त्र

111. एकत्र - विकीर्ण

112. एकतन्त्र - बहुतन्त्र

113. एकेश्वरवाद- बहुदेववाद

114. एकमुखी - बहुमुखी

[ऐ]

115. ऐश्वर्य - अनैश्वर्य

116. ऐतिहासिक - अनैतिहासिक

117. ऐक्य - अनैक्य

118. ऐहिक - पारलौकिक

119. औचित्य - अनौचित्य

[क]

120. कटु - मधु

121. करुण - निष्ठुर

122. क्रय - विक्रय

123. कम - बेसी

124. कठिन - सरल

125. कनिष्ठ - ज्येष्ठ

126. कृतज्ञ - कृतघ्न

127. कृष्ण - शुक्ल

128. कीर्त्ति - अपकीर्त्ति

129. कठोर - कोमल

130. कपटी - निष्कपट

131. कुरूप - सुरूप, सुंदर

132. कायर - निडर

133. कलुष - निष्कलुष

134. कृपण - दाता

135. कोप - कृपा

136. कर्मठ - अकर्मण्य

137. कर्म - निष्कर्म, अकर्म

138. कपट - निष्कपट

139. क्रोध - क्षमा

140. काल्हि - आइ

141. कपूत - सपूत

142. कुप्रबंध - सुप्रबंध

143. कृत्रिम - प्रकृत

144. क्रेता - विक्रेता

[क्ष]

145. क्षणिक - शाश्वत
146. क्षुद्र - महान्
147. क्षमा - दंड
148. क्षम्य - अक्षम्य

[ख]

149. खाद्य - अखाद्य
150. खंडन - मंडन
151. खल - सज्जन
152. खेद - प्रसन्न

[ग]

153. गत - आगत
154. गमन - आगमन
155. गुण - अवगुण, दोष
156. गद्य - पद्य
157. गरल - अमृत, सुधा
158. ग्रहण - त्याग
159. गुप्त - व्यक्त, प्रकट
160. गरीब - धनिक
161. गुरु - लघु
162. ग्राह्य - त्याज्य
163. गणतंत्र - राजतंत्र
164. ग्राम्य - नागर
165. गृहस्थ - संन्यासी
166. ज्ञान - अज्ञान
167. ज्ञात - अज्ञात

[घ]

168. घटब - बढ़ब
169. घर - बाहर
170. घरैया - बनैया
171. घात - प्रतिघात
172. घृणा - प्रेम

[च]

173. चपल - अचपल
174. चर - अचर
175. चिरंतन - नश्वर, अधुनातन
176. चेतन - अचेतन
177. चंचल - स्थिर, अचंचल
178. चल - अचल
179. चिन्मय - अचिन्मय, जड़
180. चिर- नवीन

[छ]

181. छल - निश्छल

182. छूत - अछूत

[ज, झ]

183. जंगम - स्थावर

184. जटिल - सरल

185. जन्म - मरण

186. जड़ - चेतन

187. जय - पराजय

188. जीवित - मृत

189. जोड़ - घटाव

190. जाग्रत - सुषुप्त

191. जातीय - विजातीय

192. ज्वार - भाटा

193. जागरण - निद्रा

194. जीवन - मृत्यु

195. ज्योति - तम

196. जल - स्थल

197. झूठ - सच

[त]

198. तरुण - वृद्ध

199. तानी - भरनी

200. तरल - ठोस

201. तम - ज्योति, आलोक

202. तीव्र - मन्द

203. तुच्छ - महान्

204. त्याज्य - ग्राह्य

205. तिमिर - प्रकाश

206. तिक्त - मधुर

207. तृष्णा - तृप्ति

208. तामसिक - सात्विक

209. तुकांत - अतुकांत

[थ]

210. थोक - खुदरा

211. थोड़ - बहुत

[द]

212. दक्षिण - वाम, उत्तर

213. दिन - राति

214. देव - दानव

215. दक्ष - अदक्ष

216. दिवा - रात्रि

217. दुर्जन - सज्जन

218. दुर्बल - सबल

219. दुर्लभ - सुलभ

220. दीर्घकाय - कृशकाय
221. दूषित - स्वच्छ
22. देय - अदेय
223. दृश्य - अदृश्य
24. दोष - गुण
225. दुराचारी - सदाचारी

[ध]

226. धनिक - गरीब
227. ध्वंस - निर्माण
228. धर्म - अधर्म
229. धृष्ट - अधृष्ट, विनीत
230. धरा - गगन

[न]

31. नगर - ग्राम
232. नश्वर - शाश्वत, अनश्वर
.33. नूतन - पुरातन
234. नित्य - अनित्य
235. नास्तिक - आस्तिक
236. निरर्थक - सार्थक
237. निरामिष - सामिष
238. निश्चेष्ट - सचेष्ट
239. निन्दा - स्तुति, प्रशंसा
240. निर्लज्ज - सलज्ज
11. नागरिक - ग्रामीण
242. निरक्षर - साक्षर
13. निन्द्य - वन्द्य
244. निर्दय - सदय
245. निर्मल - मलिन
246. नैसर्गिक - कृत्रिम, अनैसर्गिक
247. नकली - असली
248. नख - शिख
249. नव - पुरान
250. नर - नारी
'51. निद्रा - अनिद्रा, जागरण
252. निषिद्ध - अनिषिद्ध, विहित
53. नवीन - प्राचीन
254. निर्जीव - सजीव
55. न्याय - अन्याय
256. निष्काम - सकाम
257. निम्न - उच्च
258. नेता - बूढ़

[प]

259. पण्डित - मूर्ख
260. पराजय - जय

261. परतंत्र - स्वतंत्र
262. पक्ष - विपक्ष
263. पतन - उत्थान
264. पूर्ववर्ती -परवर्ती,उत्तरवर्ती,पश्चवर्ती
265. पराधीन - स्वाधीन
266. पवित्र - अपवित्र
67. पाप - पुण्य
268. पालक - संहारक
69. पूर्ण - अपूर्ण
270. पूर्व - पश्चिम
271. प्रकट - गुप्त
272. प्रतिकूल - अनुकूल
273. प्रख्यात - अख्यात
274. प्रत्यक्ष - परोक्ष, अप्रत्यक्ष
275. प्रज्ञ - अज्ञ, मूढ़
276. प्रलय - सृष्टि
277. प्रशंसा - निन्दा
278. प्राचीन - अर्वाचीन
279. प्रतीची - प्राची
280. प्रधान - गौण
281. प्रफुल्ल - म्लान
282. परमार्थ - स्वार्थ
283. पाश्चात्य - पौरस्त्य
284. प्राकृतिक - कृत्रिम
285. परिमित - अपरिमित
286. प्रवृत्ति - निवृत्ति
287. प्रश्न - उत्तर

[ब]

288. बंधन - मुक्ति
289. बाढ़ि - सुखाड़
290. बहिरंग - अन्तरंग
291. बर्बर - सभ्य
292. भारी - हल्लुक
293. भद्र - अभद्र
294. भय - निर्भय
295. भूत - भविष्य
296. भेद - अभेद
297. भौतिक - आध्यात्मिक
8. भोगी - योगी
299. भ्रान्त - निर्भ्रांत, अभ्रांत

[म]

300. मर्त्य - अमर, अमर्त्य
301. मनुज - दनुज
302. महग - सस्त
303. महात्मा - दुरात्मा

304. माय - बाप
305. मुख्य - गौण
306. मान - अपमान
307. मूक - वाचाल, मुखर
308. मिलन - विरह
309. मृदुल - कठोर
310. मंगल - अमंगल
311. मुख - प्रतिमुख, पृष्ठ
312. मान्य - अमान्य

[य]

313. यश - अपयश
314. यथार्थ - कल्पित
315. योग - वियोग
316. योग्य - अयोग्य
317. योगी - भोगी

[र]

318. रक्षक - भक्षक
319. रत - विरत
320. राग - विराग, द्वेष
321. राजतंत्र - प्रजातंत्र
322. राजा - प्रजा, रंक
323. रंगीन - रंगहीन
324. रुचि - अरुचि
325. रुक्ष - स्निग्ध
326. रिक्त - पूर्ण
327. रचना - ध्वंस

[ल]

328. लिप्त - निर्लिप्त, अलिप्त
329. लघु - गुरु, दीर्घ
330. लिखित - अलिखित
331. लुप्त - अलुप्त
332. लौकिक - अलौकिक

[व]

333. वक्र - ऋजु, सरल
334. वन्य - पालित, पोषित
335. वसंत - शिशिर
336. वहिष्कार - स्वीकार, अंगीकार
337. वाद - प्रतिवाद
338. विधि - निषेध
339. विपन्न - संपन्न
340. वियोग - संयोग

341. विरत - निरत, रत
342. विशालकाय- लघुकाय
343. विशिष्ट - साधारण
344. विश्लेषण - संश्लेषण
345. विश्वास - अविश्वास
346. विस्तार - संक्षेप
347. वृद्ध - शिशु
348. वृद्धि - ह्रास
349. वृहत् - लघु
350. व्यावहारिक- अव्यावहारिक
351. व्यष्टि - समष्टि
352. वृष्टि - अनावृष्टि
353. वैतनिक - अवैतनिक

[श]

354. शत्रु - मित्र
355. शगुन - अपशगुन
356. शयन - जागरण
357. शान्ति - अशान्ति
358. शासक - शासित
359. शिष्ट - अशिष्ट
360. शुचि - अशुचि
361. श्वेत - श्याम
362. शोषक - पोषक
363. शोक - हर्ष
364. शुभ - अशुभ
365. शुक्ल - कृष्ण
366. शीत - उष्ण
367. शुष्क - सिक्त
368. श्रीगणेश - इतिश्री
369. श्रद्धा - अश्रद्धा, घृणा
370. श्रव्य - दृश्य
371. शृंखला - विशृंखला
372. श्रांत - अश्रांत

[स]

373. सक्षम - अक्षम
374. सखा - शत्रु
375. सगुण - निर्गुण
376. सत् - असत्
377. स्तुत्य - निंद्य
378. सकर्मक - अकर्मक
379. सजल - निर्जल
380. सत्कार - तिरस्कार
381. स्थूल - सूक्ष्म
382. स्मरण - विस्मरण

383. स्वदेशी - परदेशी, विदेशी
384. स्वकीया - परकीया
385. स्वजाति - विजाति
386. स्वर्ग - नरक
387. स्वाधीन - पराधीन
388 स्वार्थ - परार्थ
389. संकल्प - विकल्प
390. संकीर्ण - विस्तीर्ण
391. संतोष - असंतोष
392. संधि - विग्रह
393. सदाचार - दुराचार
394. संपन्न - विपन्न
395. सभ्य - असभ्य
396. सरल - वक्र
397. सलज्ज - निर्लज्ज
398. साकार - निराकार
399. सादर - निरादर
400. सात्विक - तामसिक
401. सुगंध - दुर्गंध
402. सुधर - गरल
403. सुपथ - कुपथ
404. सुपरिणाम - दुष्परिणाम
405. सुबुद्धि - कुबुद्धि
406. सुमति - कुमति, दुर्मति
407. सुमार्ग - कुमार्ग
408. सुलभ - दुर्लभ
409. सौभाग्य - दुर्भाग्य
410. सुर - असुर
411. स्वस्थ - अस्वस्थ
412. स्पष्ट - अस्पष्ट
413. सहयोगी - प्रतियोगी
414. सापेक्ष - निरपेक्ष

[ह]

415. हर्ष - विषाद, शोक
416. हास - रुदन
417. हिंसा - अहिंसा
418. हित - अहित
419. ह्रस्व - दीर्घ

प्रश्न ओ अभ्यास

1. विलोम शब्दसँ की बुझैत छी ?
2. विपरीतार्थक शब्दमे रूपान्तरण करबाक क्रममे कोन-कोन बातक ध्यान राखल जयबाक चाही ?
3. निम्नलिखितक विलोम शब्द लिखू :

स्थावर-	दीर्घकाय - .....
तृष्णा-	जाग्रत- .....
ध्वंस-	नश्वर- .....
निषिद्ध-	परिमित- .....
पूर्ववर्ती -	भौतिक- .....
अंतर्मुखी-	उदात्त - .....
ऋजु-	आस्तिक- .....
गुरु-	ज्ञात- .....
एकेश्वरवाद-	कर्मठ- .....
आयात-	चिरंतन- .....
कनिष्ठ-	गरल- .....
क्षुद्र-	औचित्य- .....
दक्ष-	निरामिष- .....

4. विपरीतार्थक शब्दक ज्ञानसँ शिक्षार्थीक भाषा कोना समृद्ध होइछ ? दू वाक्यमे लिखू।

श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द

मैथिलीमे किछु युग्म शब्द एहन होइछ जे सुनबामे लगभग एके रंग लगैत अछि, मात्र एक आध अक्षर वा मात्राक अंतर होइत छैक, मुदा ओकर अर्थमे बहुत अन्तर भऽ जाइत अछि। एहन शब्दकें* श्रुतिसम (सुनबामे समान जकाँ) भिन्नार्थक (फराक अर्थ राखयवला) शब्द कहल जाइछ। एहन शब्दक एक सूची प्रस्तुत अछि। एकरा छात्र लोकनि कंठाग्र कऽ लेथि।

1. अंश = भाग, खण्ड।

   अंस = कन्हा।

2. अनल = आगि।

   अनिल = बसात।

3. अपेक्षा = इच्छा।

   उपेक्षा = अनादर।

4. अनु = पाछू।

   अणु = कण।

5. अवधि = काल, समय।

   अवधी = अवध देशक भाषा।

6. अचर = नहि चलयवाला।

   अनुचर = दास, नौकर।

7. अभिहित = कथित।

   अविहित = अनुचित।

8. असित = कारी।

   अशित = भुक्त

9. अशक्त = शक्तिहीन ।

असक्त = विरक्त ।

10. अलि = भौंरा ।

अली = सखी ।

11. आदि = आरम्भ ।

आदी = आद, अदरख, अभ्यासी ।

12. आहुत = यज्ञ ।

आहूत = आमंत्रित ।

13. इत्र = सेंट ।

इतर = दोसर ।

14. उद्यत = तैयार ।

उद्धत = उद्दण्ड ।

15. उपाधि = प्रतिष्ठासूचक शब्द, खिताब ।

उपाधी = उत्पाती ।

16. कचकच = बालुयुक्त ।

कुचकुच = कुड़िआबयवला ।

17. कुचरब = कौआक बाजब, कुचेष्टा करब ।

कचरब = खूब खायब ।

18. कट = नितंब, कुश ।

कटि = डाँड़ ।

19. कपिल = मुनिक नाम ।

कपिला = कैल गाय ।

20. कपोत = पड़वा ।

कपोल = गाल ।

21. कोठा = पक्का घर ।

कोठी = अन्न राखबा लेल विशेष प्रकारक पात्र ।

22. कंकाल = अस्थि पंजर ।

कंगाल = दरिद्र, भिखमंगा ।

23. कंजर = कंजूस, मक्खीचूस ।

कुंजर = हाथी ।

24. कोस = दूरीक मापदंड ।

कोश = खजाना ।

25. कानि = लोकलज्जा ।

कानी = एक आँखिवाली स्त्री ।

26. कूच = प्रस्थान ।

कुच = स्तन ।

27. कलि = कलियुग ।

कली = आधा फुलायल फूल ।

28. कृति = काज, रचना ।

कृती = मृगचर्म ।

29. कृत्तिका = एक नक्षत्र ।

कृत्यका = एक देवी ।

30. कुजन = खराब लोक ।

कूजन = पक्षी सभक चहचहाहट ।

31. कश = चाबुक ।

कष = कसौटी ।

32. कलिल = फेंटल ।

कलील = थोरबय, कनेक ।

33. कल्लोल = समुद्रक लहरि ।

कलोल = घोल करब ।

34. कूल = कछेर, तट ।

कुल = वंश ।

35. गज = हाथी ।

गज = दू हाथक माप ।

36. गर = गरदनि ।

गढ़ = किला ।

37. गुड्डी = पतंग ।

गड्डी = थाक ।

38. गुड़ = शक्कर ।

गूढ़ = गंभीर ।

39. घट = घैल ।

घाट = पोखड़िक ओ स्थान जतय लोक स्नान करैत अछि ।

40. चिर = दीर्घ कालीन, पुरान ।

चीर = वस्त्र ।

41. चूर = चूर्ण, बुकनी ।

चूड़ा = केशक चोटी, पहाड़ ।

42. चालि = गति ।

चाली = कृमि ।

43. चेरा = जारनिक फाँक ।

चेला = शिष्य ।

44. च्युत = भ्रष्ट ।

चूत = आमक गाछ ।

45. चास = खेती ।

चाष = नीलकंठ पक्षी ।

46. चोला = शरीर ।

चोली = कंचुकी, आङ्गी ।

47. जवान = युवा ।

ज़बान = जीभ ।

48. जरा = वृद्धावस्था ।

ज़रा = कनिएँ ।

49. तरणी = नाव ।

तरणि = सूर्य ।

तरुणी = युवती ।

50. दिन = दिवस ।

दीन = गरीब ।

51. द्विप = हाथी ।

द्वीप = टापू ।

52. नीड़ = खोँता ।

नीर = पानि ।

53. नारी = स्त्री ।

नाड़ी = नब्ज़ ।

54. निसा = रति ।

निसाँ = नशा ।

55. नंगट = बेंगट ।

नाङ्ट = वस्त्रहीन ।

56. परुष = कठोर ।

पुरुष = मर्द ।

57. पथ = बाट ।

पथ्य = रोगीक भोजन ।

58. प्रसाद = कृपा ।

प्रासाद = महल ।

59. पानि = जल ।

पाणि = हाथ ।

60. पाश = बन्धन, जाल ।

पास = प्रवेश पत्र, लग ।

61. पिक = कोइली ।

पीक = पानक थूक ।

62. पिलुआ = पिल्लू, कीड़ा ।

पिहुआ = छोट टेल्ह ।

63. प्रकृत = यथार्थ ।

प्राकृत = स्वाभाविक, एक प्राचीन भाषा ।

64. पुर = नगर ।

पूर = आधिक्य ।

65. फ़न = कला, हुनर ।

फण = साँपक फण ।

66. फेर = दोसर बेर ।

फेरा = चक्कर ।

67. बंदी = कैदी ।

वंदी = भाट ।

68. बारिस = वर्षा ।

वारीश = समुद्र ।

69. बिना = अभाव, कमी ।

वीणा = वाद्य यंत्र विशेष ।

70. मद = अहंकार ।

मद्य = शराब ।

71. मास = महीना ।

माष = उड़ीद ।

72. मर = मुइल ।

मारा = माछ विशेष ।

73. मरीच = गरम मशाला विशेष ।

मारीच = एक राक्षसक नाम ।

74. रौद = गर्मी ।

रौदी = वर्षाहीन ।

75. लता = लत्ती ।

लत्ता = फाटल-चिटल वस्त्रक अंश ।

76. सुत = पुत्र ।

सूत = ताग, सारथी ।

77. शित = पिजायल (शान चढ़ाओल), दुर्बल ।

शीत = ओस, ठंडा ।

78. सुधि = स्मृति ।

सुधी = जानकार, पँडित, विद्वान् ।

79. संकर = दू गोट जातिक मिश्रण ।

शंकर = शिव ।

80. सज्जा = सजावट ।

शय्या = ओछाओन ।

81. हर = महादेव ।

हार = माला ।

82. हटब = स्थान छोड़ब ।

हँटब = रोकब ।

83. हुक = पीठक दर्द ।

हूक = हृदयक पीड़ा ।

84. हरि = विष्णु ।

हरी = हरियर रंगक ।

85. हरदि = मसाला विशेष ।

हरदा = हारि ।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. पर्यायवाची शब्द आ श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्दमे की अन्तर अछि ? उदाहरण दऽ स्पष्ट करू ।

2. निम्नलिखित श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्दक अर्थ लिखू–

(क) अपेक्षा =

उपेक्षा =

(ख) अवधि =

अवधी =

(ग) उद्यत =

उद्धत =

(घ) कपिल =

कपिला =

(ङ) कलि =

कली =

(च) कुजन =

कूजन =

(घ) निसा =

निसाँ =

(ज) संकर =

शंकर =

पर्यायवाची शब्द

कोनो शब्दक समान अर्थवला अन्य शब्दकेँ पर्यायवाची अथवा समानार्थी शब्द अथवा प्रतिशब्द कहल जाइत अछि : जेना- अमृतक बदलामे पीयूष, सुधा आदि पर्यायवाची शब्द भेल ।

छात्र लोकनिकेँ चाही जे निम्नलिखित पर्यायवाची शब्दकेँ कंठाग्र कऽ लेथि ।

अंग- देह, अंश, खंड, भाग, विभाग ।

आगि- अग्नि, वह्नि, पावक, कृशानु, अनल, हुताशन ।

अन्हार- तम, तिमिर, तमिस्रा, ध्वांत ।

अपमान- अनादर, अवज्ञा, बेइज्जती, अवहेलना, तिरस्कार ।

असुर- दनुज, दानव, निशाचर, निशिचर, रजनीचर, रतिचर, राक्षस ।

अभय- निर्भय, निडर, निरापद, निःशंक ।

आम- आम्र, चूत, रसाल, अमृतफल, सहकार ।

आनन्द- हर्ष, आमोद, प्रसन्नता, आह्लाद, उल्लास, प्रीति ।

आकाश- अन्तरिक्ष, अनन्त, अम्बर, गगन, नभ, व्योम ।

आँखि- अक्षि, चक्षु, दृग, दृष्टि, नयन, नेत्र, लोचन ।

इच्छा- आकांक्षा, अभिलाषा, कामना, ईहा, वांछा ।

इन्द्र- देवेन्द्र, महेन्द्र, पुरन्दर, सुरपति, सुरेश, शक्र, शचीपति, देवराज ।

कपड़ा- अम्बर, चीर, पट, वस्त्र, वसन ।

कमल- अम्बुज, अरविन्द, इन्दीवर, उत्पल, कुवलय, कोकनद, नीरज, जलज, पंकज ।

किरण- अंशु, रश्मि, भानु, प्रभा, मरीचि, ज्योति ।

कुबेर- किन्नरेश, धनद, यक्षराज, धनाधिप ।

क्रोध- तामस, रोष, अमर्ष, कोप ।

कामदेव- अनंग, कंदर्प, काम, पंचशर, रतिपति, मकरध्वज, मदन ।

केरा- कदली, गुच्छ फला, रंभा, भानुफला, केला ।

गणेश- एकदन्त, गजवदन, गजानन, गणपति, गिरिजानन्दन, गिरिजासुत, महाकाय, मोदकप्रिय, विघ्ननाशक, लम्बोदर, विनायक ।

गंगा- जाह्नवी, त्रिपथगा, देवापगा, मन्दाकिनी, सुरधुनि, सुरसरि, भागीरथी ।

गाय- गऊ, गौ, भद्रा, गौरी, सुरभी, रेवती, धेनु ।

घर- आलय, निवास, सदन, वास, गृह, निकेतन, भवन, गेह ।

घोड़ा- अश्व, घोटक, तुरंग, वाजि, हय ।

घरवाली- दारा, गृहिणी, भार्या, वामांगी, जाया, गृहस्वामिनी, प्राणप्रिया, अर्द्धांङ्गिनी ।

चन्द्रमा- इन्दु, कलानिधि, द्विजराज, चान, मृगांक, राकापति, शशि, रजनीपति, सारंग, सुधाकर ।

चिड़ै- अंडज, खेचर, खग, गगनधारी, नभचर, पक्षी, विहग, द्विज, पक्षी ।

चोर- रजनीचर, चौर, दस्यु, तस्कर, कुंभिल, मोषक, खनक ।

जंगल- अरण्य, कानन, वन, विपिन ।

तलवार- असि, कृपाण, खंग, खड्ग, करवाल ।

दया- अनुकम्पा, अनुग्रह, कृपा, संवेदना, करुणा, क्षमा, प्रसाद ।

दुःख- उत्पीड़न, क्लेश, कष्ट, खेद, पीड़ा, वेदना, विषाद, व्यथा ।

दुर्गा- अभया, कल्याणी, कामाक्षी, कालिका, चंडिका, चामुंडा, भगवती, वागीश्वरी, महागौरी ।

दाँत- दन्त, दशन, रद, खरु ।

देवता- अमर्त्य, अमर, असुरारि, आदित्य, देव, निर्जर, वसु, सुर ।

नदी- तरंगिणी, आपगा, नद, निम्नगा, सरिता, सरित्, तटिनी, शैवालिनी ।

नाव- उडुप, जलयान, डोंगी, प्लव, नौका, पोत ।

पहाड़- अचल, अद्रि, तुंग, नग, पर्वत, भूधर, शैल, मेरु, भूधर, धरणीधर, गिरि ।

पानि- अंबु, अंभ, उदक, जल, नीर, जीवन, वारि, पय, सलिल, शम्बर ।

पार्वती- अपर्णा, अंबिका, दुर्गा, अभया, उमा, कुमारी, गिरिजा, गौरी, सर्वमंगला ।

पुरुष- नर, मर्द, मनुष्य, मानव, जन, मानुष ।

फूल- कुसुम, पुष्प, प्रसून, सुमन, सारंग ।

बिजली- चंचला, क्षणप्रभा, तड़ित्, दामिनी, बिजुरी, विद्युत् ।

भौंरा- अलि, भँवरा, भ्रमर, भृंग, मधुकर, मधुप ।

माय- जननी, धात्री, प्रसू, माँ।

मुकुट- अवतंस, किरीट, कोटीर, मौलि, शेखर ।

मुनि- तापस, यती, वैरागी, संत, संन्यासी, साधु, महात्मा ।

मेहदी- नखरंज, कोकदंता, मेंधिका, रागगर्भा ।

मोक्ष- निर्वाण, परमगति, परमपद, मुक्ति, सद्गति ।

मोती- मुक्ता, मुक्ताफल, मौक्तिक, शौक्तिक ।

राजा- अवनीश, क्षितीश, देव, नरपति, नृपति, नृप, नरेन्द्र, नरेश, भूप, महीपाल, महीपति, सम्राट्, महीप ।

लक्ष्मी- इंदिरा, कमला, पद्मा, भार्गवी, रमा, श्री, हरिप्रिया, हरिवल्लभा ।

वसन्त- ऋतुराज, मधु, माधव ।

बरखा- वर्षा, घनाकर, घनागम, प्रावृट ।

विवाह- परिणय, पाणिग्रहण, व्याह, दारकर्म, उपयाम ।

विष्णु- अच्युत, उपेन्द्र, केशव, गरुड़ध्वज, चक्रपाणि, चतुर्भुज, पीताम्बर, पुरुषोतम, लक्ष्मीपति, विश्वरूप ।

शब्द- आरव, घोष, ध्वनि, नाद, निनाद ।

शरीर- कलेवर, काय, गात्र, तनु, मुद्गल ।

समुद्र- उदधि, जलधाम, जलधि, तोयनिधि, नीरधि, नीरनिधि, रत्नाकर, वारिनिधि, सिन्धु, सागर, सलिलेश, वारीश, पारावार ।

सरस्वती- गिरा, पद्मासना, भारती, वागीश्वरी, वाणी, विधात्री, विणापाणि, विद्यादेवी, शारदा ।

संसार- जगत, जगती, भुवन, विश्व, दुनियाँ ।

साँप- अहि, उरग, कुंडली, चक्षुःश्रवा, सरीसृप, भुजग, भुजंग, विषधर ।

सोना- कंचन, कनक, जाम्बूनद, हाटक, हिरण्य, हेम, स्वर्ण ।

सिंह- केसरी, व्याघ्र, शार्दूल, मृगराज, मृगेन्द्र ।

सुन्दर- कमनीय, मनोहर, रम्य, रमणीक, रुचिर, ललित, सुहावना ।

सूर्य- आदित्य, दिनकर, दिवाकर, भानु, भास्कर, मार्तण्ड, रवि ।

स्वर्ग- सुरलोक, दिव, शक्रभुवन, देवलोक ।

हनुमान- अंजनीपुत्र, कपीश्वर, केसरीनन्दन, पवनकुमार, पवनसुत, बजरंगी ।

हाथी- कुंजर, गज, गयंद, सारंग, हस्ती ।

होशियार- कुशल, चतुर, दक्ष, निपुण, पटु, प्रवीण, विज्ञ ।

हृदय- उर, वक्ष, हिय, छाती, दिल ।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. पयार्यवाची शब्द ककरा कहल जाइछ ? उदाहरण दऽ स्पष्ट करू ।
2. निम्नलिखित शब्दक तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखू :-

आँखि	–	देह	–
पंछी	–	महिपाल	–
गौरी	–	हनुमान	–
साँप	–	मुनि	–
जंगल	–	क्रोध	–
आकाश	–	कमल	–

3. कोष्ठकमे सँ उपर्युक्त शब्द चुनि कऽ खाली जगहकेँ भरी -

(क) एकेटा दाँत रहलाक कारण गणेशजीकेँ .....कहल जाइत अछि । (गजेन्द्र, गजवदन, एकदन्त)

(ख) पिआसलकेँ .....देब धर्म अछि । (मेघपुष्प, पानि, अमृत)

संक्षेपण

सामान्य रूपसँ लेखक अपन कथ्यक सम्प्रेषणमे लालित्य आनबा तथा काव्यवस्तुक सौन्दर्य वृद्धिक लेल अलंकार, रस, मुहावरा, लोकोक्ति आदिक प्रयोग करैत छथि । एहि क्रममे कतेको अप्रासंगिक विषय सभ सेहो समाविष्ट भऽ जाइछ ।

आजुक व्यस्त जीवनमे समयक बेश महत्त्व अछि । कार्यालयमे काज करयवला अधिकारी, वकील, न्यायाधीश, सम्पादक, संवाददाता आदिक कार्यक आधिक्यक कारणेँ मोट-मोट सँचिका पूर्ण रूपेँ पढ़बामे असमर्थ जकाँ भऽ जाइत छथि, पाठक मूल अंशक रसास्वादन सार रूपमे करय चाहैत छथि । तेँ अभिव्यक्तिमे वस्तुनिष्ठता प्रभावी मानल जाइछ । एना किएक होइत अछि ? ई एहि लेल होइत अछि जे अनावश्यक बात लोककेँ नीक नहि लगैत छैक । तेँ संक्षेपणक ज्ञान आवश्यक भऽ जाइछ ।

संक्षेपणक सामान्य अर्थ थिक संक्षेप करब वा थोड़मे कहब वा लिखब अथवा जकर अध्ययनसँ पाठककेँ मूल अंशक पूर्ण ज्ञान भऽ जाय । वस्तुतः संक्षेपण लेखकीय कला थीक जाहिसँ गागरमे सागरक समावेश भऽ सकैछ ।

संक्षेपणमे निम्नलिखित गुण अपेक्षित अछि-

1. **संक्षिप्तता** :- संक्षिप्तता संक्षेपणक एकटा प्रधान गुण अछि । संक्षेपण मूल अंशक एक तिहाइ होयबाक चाही ।
2. **स्पष्टता** :- संक्षेपणमे जे किछु लिखल जाय से स्पष्ट होयबाक चाही ।
3. **भाषाक सरलता** :- संक्षेपण लेल आवश्यक अछि जे ओकर भाषा सरल ओ सुस्पष्ट हो ।
4. **शुद्धता** :- संक्षेपणमे भाव आ भाषाक शुद्धता होयबाक चाही ।
5. **प्रवाह आ क्रमबद्धता**- संक्षेपणमे भाव क्रमबद्ध आ भाषा प्रवाहपूर्ण होयबाक चाही ।

6. **पूर्णता**- संक्षेपण एहि तरहेँ लिखल जाय जे ओ अपनामे पूर्ण बुझि पड़य । कोनो महत्त्वपूर्ण कथ्य छुटि नहि जाय ।

संक्षेपणक नियम

1. संक्षेपण तैयार कयलाक उपरान्त कथ्यक भाव व विचारक अनुरूप एकटा संक्षिप्त शीर्षक देबाक चाही ।
2. सामान्यतया संक्षिप्त अंश मूल सन्दर्भक एक तिहाइ होयबाक चाही ।
3. संक्षेपण क्रमबद्ध रूपसँ लिखल जयबाक चाही । मूल सन्दर्भक पूरा भाव संक्षेपणमे आबि जयबाक चाही ।
4. लोकोक्ति, उदाहरण, अलंकार, अनावश्यक एवं अप्रासांगिक बात छाँटि देबाक चाही ।
5. संक्षेपणक अन्तमे शब्दक गणना कऽ लिखि देबाक चाही ।

संक्षेपणक किछु उदाहरण

1

जनक, याज्ञवल्क्य, गौतम, गंगेश, मण्डन, विद्यापति, ज्योतिरीश्वरक महिमामयी भूमि मिथिला, न्याय, तत्त्वमीमांसा एवं सांख्यक जन्मभूमि मिथिला भौगोलिक दृष्टिएँ 25°28' सँ 26°52' उत्तर अक्षांश तथा 84° 56' सँ 86°46' पूर्व देशान्तर मध्य अवस्थित अछि । सीमाक दृष्टिएँ वृहद्विष्णुपुराणमे वर्णित मिथिलाक सीमाक प्रसङ्ग कहल गेल अछि जे मिथिलाक उत्तरमे नागाधिराज हिमालय अपन स्वर्ण मुकुट धारण कयने छथि । दक्षिणमे पतित पावनी गंगा अपन कल कल ध्वनिसँ एकर चरण-स्पर्श करैत छथि । पूर्वमे नृत्य करैत कौशिकी छथि तँ पश्चिममे धीर गामिनी गंडकी अपन रूप-रश्मिसँ एकर शृंगार करैत छथि । (82 शब्द)

मिथिलाक सीमा

मिथिला भौगोलिक दृष्टिएँ 25°28' सँ 26°52' उत्तर अक्षांश तथा 84° 56' सँ 86° 46' पूर्व देशान्तर मध्य अवस्थित अछि जकर उत्तरमे हिमालय, दक्षिणमे गंगा पूर्वमे कौशिकी तथा पश्चिममे गंडकी छथि । (28 शब्द)

संक्षेपणमे प्रयुक्त शब्द मूलक एक-तिहाइ सँ दू-चारि वेशी वा कम सेहो भऽ सकैत अछि ।

2

काव्यात्मक अभिव्यक्ति सभक अनेक विधा मानल गेल अछि । सरस अभिव्यक्ति जनमानससँ नि:सृत हो अथवा मुनिमानससँ, प्रत्येक अवस्थामे ओ काव्य-कृतिए मानल जायत । लोकगीत, एक एहन प्रकारक काव्य अछि जकर विशेषता तुलनात्मक रूपसँ अद्‌भुत आ अनेक अछि । एहन विशेषता काव्यक कोनो अन्य विधामे प्राय: नहि पाओल जाइछ । (47 शब्द)

लोकगीतक वैशिष्ट्य

काव्यात्मक अनेक विधा मानल गेल अछि जाहिमे लोकगीतक विशेषता अद्‌भुत अछि । ओ अन्य विधामे दुर्लभ अछि ।(16 शब्द)

3

एकता आ राष्ट्रक शक्तिमे अभिन्न सम्बन्ध अछि । कोनो राष्ट्र तावत् हृष्ट-पुष्ट आ बलिष्ठ नहि कहल जा सकैछ जावत ओकर विभिन्न अंगमे पारस्परिक एकात्मकता नहि होइक । ओना तँ मनुष्य रूप, रंग, जाति, धर्म, योग्यता, स्वभाव आदिमे एक दोसरसँ भिन्न रहैत अछि, परंच व्यापक रूपमे ओहि सभमे एक प्रकारक आभ्यंतरिक एकता रहैत छैक जे समान लक्ष्य दिस प्रेरित करबामे एहि सभ विभिन्नताकेँ गौण बना दैत छैक । इएह आभ्यन्तरिक एकता थिक एकात्मकता, जाहि पर राष्ट्रक विकास आ सुरक्षा निर्भर रहैत छैक । साधारणतया ई देखबामे अबैत अछि । उपर्युक्त विभिन्नता सभक विकाससँ असन्तोष, वैमनस्य आदिक प्रादुर्भाव होइत रहैत अछि आ ओहिपर देशक घटनाचक्र घुमैत रहैत अछि । एहि प्रक्रियाक सीमा बदलैत रहैत अछि, व्यक्तिसँ लऽ कऽ देश धरि । परन्तु एहिसँ ई नहि बुझबाक चाही जे एहि क्रियासँ राष्ट्रक रक्षाक आभ्यन्तरिक एकताक लोप भऽ जाइछ । (126 शब्द)

राष्ट्रिय एकताक महत्त्व

कोनो राष्ट्र तखनहि शक्तिशाली मानल जाइत अछि जखन ओकर अंग एकजुट होअय। मनुक्य जाति, धर्म, क्षेत्रमे विभिन्न रहितो एकजुट रहैत छैक जाहिपर देशक सुरक्षा आ विकास निर्भर करैत छैक । देशक घटनाक्रम वैमनस्य उपस्थित करैत रहैत अछि,

तथापि राष्ट्ररक्षाक एकता लोप नहि होइछ । (42 शब्द)

4

राजा-प्रजा, नेता-जनता, शिक्षक-शिष्य, पिता-पुत्र, बन्धु-परिवार, पूँजी-श्रम, किसान-मजदूर, क्रेता-विक्रेता, वक्ता-श्रोता, लेखक-पाठक ओ व्यक्ति-समाजमे सबतरि सबखन लेब-देबक सिलसिला लागल अछि । प्रकृति पुरुषक द्वन्द्वात्मक हाट-बाजारक एहि संसारक अंग-अंग एहि युग्म योजनासँ कोनहुना-ने-कोनहुना योजित अछि-चाहे ओ वस्तुवादी लेन-देन हो, भावात्मक आदान-प्रदान हो अथवा धन-ऋणमूलक भाव-अनुभाव हो रंच-रंच, इंच-इंच अवंच नहि । (68 शब्द)

आदान-प्रदान

समस्त संसारक क्रिया-कलापमे अबाध गतिएँ लेब-देबक काज भऽ रहल अछि-चाहे ओ भौतिकवादी, भावनात्मक अथवा ऋणमूलक लेन-देन हो, अन्यथा काज चलब असंभव । (25 शब्द)

5

एहि दुहू प्रकारक नीतिमे कतेक घनिष्ठता अछि से प्राय: विद्वानलोकनिक ध्यानमे ततेक नहि रहैत छनि जतेक रहब आवश्यक एवं उचित थिक । समाजनीति एक एहन व्यापक शब्द थिक जकरा अन्तर्गत केवल राजनीतिक कोन कथा सम्पूर्ण नीतिक समावेश भऽ सकैछ । पाश्चात्य विचारेँ धर्मनीतियहुकेँ समाजनीतिक एक अंग मानव आवश्यक, परन्तु हमरा भारतीय जनताक विचारेँ समाजनीतिसँ किछु मात्रा कम व्यापक धर्मनीति नहि मानल जा सकैछ, कारण एहि ठाम धर्म शब्दहिक अन्तर्गत मनुष्यक कोन कथा अन्यान्यो जीव-जन्तुक सम्पूर्ण क्रिया सन्निहित अछि । शीतलता, तरलता आदि हमरालोकनि पानिक धर्म बुझैत आयल छी एवं दाहकता आदिकेँ आगिक धर्म बुझैत छी । अभिप्राय ई जे कोनो वस्तुक स्वभाव आओर धर्ममे भेद नहि । (103 शब्द)

राजनीति ओ समाजनीति

समाजनीति एक एहन वृहत् शब्द थिक जाहिमे नहि केवल राजनीति अपितु सम्पूर्ण नीतिक समावेश भऽ सकैछ । पाश्चात्य विद्वान् धर्मनीतियहुँकेँ समाजनीतिक एक अंग

मानैत छथि जाहिमे सम्पूर्ण मानवीय क्रिया अन्तर्निहित अछि । कोनो वस्तुक स्वभाव वा धर्ममे भेद नहि होइछ । (38 शब्द)